प्रातः क्लास। ओमशान्ति 21-9-67

रिकॉर्ड:- तुम्हीं हो माता:- ओमशान्ति। मीठे2 रूहानी बच्चों ने गीत सुना। आत्माओं ने इन जिस्मानी कर्मइन्द्रियों से गीत सुना। गीत में तो पहले तो ठीक था। पिछाड़ी को फिर भक्ति की असर थी। तुम्हारे चरणों की धूर.. अब बच्चे चरणों के धूर थोड़े ही होते हैं। यह रांग है। बच्चों को बाप आकर राईट समझाते हैं। बाप आते भी हैं वहाँ से जहाँ से बच्चे आते हैं। निर्वाण धाम से। बच्चों को सब को आने का समाचार तो सुनाया। अपना भी सुनाया है कि मैं कैसे आता हूँ। आकर के क्या करते हैं। रामराज्य स्थापन करने अर्थ रावण पर जीत पहनाते हैं। बच्चे जानते राम राज्य और रावण राज्य इस पृथ्वी पर ही कहेंगे। अभी सारी पृथ्वी पर रावण राज्य है। फिर सारी पृथ्वी पर राम राज्य होगा। तुम अभी विश्व के मालिक बनते हो। आसमान धरती सूर्य आद सब तुम्हारे हाथ में आ जाते हैं। तो कहेंगे रावण राज्य भी सारे विश्व पर, फिर राम राज्य भी सारे विश्व पर। रावण राज्य में 500 करोड़ हैं। राम राज्य में थोड़े होते हैं। फिर आते2 वृद्धि को पाते हैं। रावण राज्य में बहुत वृद्धि होती है। क्योंकि मनुष्य विकारी बन जाते हैं। राम राज्य में हैं निर्विकारी। मनुष्यों की ही कहानी है। तो राम भी बेहद का मालिक तो रावण भी बेहद का मालिक है। अभी कितने अनेक धर्म हैं। गाया हुआ हुआ है अनेक धर्मों का विनाश। इस समय अनेक आसुरी धर्म हैं। बाबा ने झाड़ पर भी सारा समझाया है। अब दशहरा आना है। रावण को फिर जलाते रहेंगे। यह है हद का जलाना। तुम्हारी है बेहद की बात। रावण को भी सिर्फ भारत वासी ही जलाते हैं। जहाँ2 भारतवासी होंगे वहाँ जलावेंगे। वह है हद का दशहरा। दिखाते हैं लंका में रावण राज्य करते थे। और सीता को चुराये अपने लंका में ले गये। यह हो गई हद की बातें। अब बाप कहते हैं सारे विश्व पर रावण का राज्य है। राम का राज्य अब है नहीं। रामराज्य अर्थात ईश्वर का स्थापन किया हुआ। सतयुग को कहा जाता है रामराज्य। माला सिमरते हैं ना रघुपति राजा राम की नहीं सिमरते हैं। राजाएं जो बनते हैं, जो सारे विश्व की सेवा करते हैं उनको माला सिमरते हैं। बाबा ने रुण्ड माला भी समझाई है। उनकी पूजा करते हैं। रुण्ड माला राज्य करते हैं। अब दशहरे का उत्सव आता है। फिर दीपमाला मनाते हैं। क्यों मनाते हैं, क्योंकि देवताओं की ताजपोशी होती है। कारोनेशन पर बत्तियाँ आदि बहुत जलाते हैं। एक तो ताजपोशी दूसरा फिर कहा जाता है घर2 में दीपमाला। हरेक आत्मा की ज्योत जग जाती है। अभी सब आत्माओं की ज्योत बुझी हुई है। आयरन एजेड है माना अंधियारा। अंधियारा माना भक्तिमार्ग। भक्ति करते2 ज्योत हल्की (हल्की) हो जाती है। बाकि वह दीपमाला तो आर्टिफिशियल है। ऐसे नहीं कि कारोनेशन होता है इसलिए आतशबाजी करते हैं। दीपमाला पर लक्ष्मी को बुलाते हैं पूजा करते हैं। यह उत्सव है भक्ति मार्ग का। यह रांग है। जो भी राजा तख्त पर बैठते हैं उनका कारोनेशन डे मनाया जाता है धूमधाम से। यह सब है हद की। अब तो बेहद का विनाश सच्चा2 दशहरा होना है। बाप आये, सब की ज्योत जगाने। मनुष्य समझते हैं हमारी ज्योत बड़ी ज्योत से मिल जावेगी। ब्रह्म समाजों के मंदिर में सदैव ज्योत जगी रहती है। समझते हैं जैसे परवाने ज्योत पर फिदा होते हैं, वैसे हमारी भी जो आत्मा है वह उस बड़ी ज्योत में मिल जावेगी। इस पर दृष्टान्त बताया है। अब तुम हो आधा कल्प के आशुक। तुम आये एक माशूक पर फिदा हुए हो। जलने की बात नहीं। जैसे वह आशुक-माशुक होते हैं तो एक दो के आशुक बन जाते हैं। यहाँ तो एक ही माशुक है। बाकि सब हैं आशुक। सभी आशुक उस माशुक को भक्ति मार्ग में याद करते रहते हैं। माशुक आप आओ तो तुम्हारे पर हम बलि चढ़ें। तुम्हारे सिवाये हम और किसी को याद नहीं करेंगे। यह तुम्हारा जिस्मानी लव नहीं है। उन आशुक माशुक का जिस्मानी लव होता है। बस। एक दो को देखते रहते हैं। देखने से जैसे तृप्ती हो जाती है। यहाँ है एक माशुक, बाकि सब आशुक। सभी बाप को याद करते हैं। भल कोई नेचर आद को भी मानते हैं फिर भी है गाड, है भगवान मुखों से जरूर निकलता है। सब उनको बुलाते हैं। हमारी दुख दूर करो। भक्ति मार्ग में तो बहुत आशुक माशुक होते हैं। कोई किसका आशुक, कोई किसका आशुक। हनुमान के कितने आशुक होंगे। ढेर। सभी

अपने2 माशुक के चित्र बनायें फिर आपस में मिल कर बैठ उनकी पूजा करते हैं।पूजा कर फिर माशुक को डूबोये देते हैं। अर्थ कुछ भी नहीं निकलता।यहाँ वह बात नहीं।यह तुम्हारा माशुक सुन्दर गोरा है।कब सांवरा बनता नहीं।बाप मुसाफिर आये सभी को गोरा बनाते हैं।तुम भी मुसाफिर हो ना। दूसरे देश से आकर यहाँ पार्ट बजाते हो।मनुष्य नाटक रचते हैं तो उसर देश के उसी देश में ही पार्ट बजाते हैं। तुम दूसरे देश से नंगे आये हो।यहाँ आये पार्ट बजाया है।तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार समझते हैं। अभी तुम त्रिकालदर्शी भी बन गये हो।रचता और रचना को जान गये हो।तुम हो आस्तक ब्रह्मा कुमार-कुमारियाँ।वह हो गये नास्तक कुमार और नास्तक कुमारी।फिर रचता के आद मध्य अंत को भी जानते हो। तुम तो हो गये त्रिकालदर्शी आस्तक ब्रह्मा कुमार-कुमारियाँ।जैसे जगदगुरु आद का टाइटल मिलता है ना।तुमको भी यह टाइटल मिलती है।तुमको सबसे अच्छा टाइटल मिलता है स्वदर्शन चक्र धारी।तुम्हारी बड़ी मर्तबा है ना। शिव बाबा को यह टाइटल दे सकते हैं?स्वदर्शन चक्रधारी तुम ब्राह्मण हो हो या शिव बाबा भी स्वदर्शन चक्रधारी है?(शिव बाबा भी है )हाँ।क्योंकि स्वदर्शनचक्रधारी आत्मा होती है।शरीर के साथ।बाप भी इस में आकर समझाते हैं।शिव बाबा स्वदर्शनचक्रधारी न हो तो तुमको कैसे बनावेंगे।स्वदर्शनचक्रधारी माना सृष्टि के आद मध्य और अंत का उनको ज्ञान है।बच्चे जानते है वह सुप्रीम ऊंच ते ऊंच आत्मा है।देह को थोड़ेही कहा जाता है। वह सुप्रीम बाप ही आकर तुमको सुप्रीम बनाते हैं।स्वदर्शचक्रधारी बनाते है। स्वदर्शनचक्रधारी आत्माओं सिवाये और कोई बन न सके। कौन सी आत्मायें?जो ब्राह्मण धर्म में हैं।जब शुद्र धर्म में थे तो नहीं जानते थे।अभी बाप द्वारा तुमने जाना है।बाप तुमको भी स्वदर्शनचक्रधारी त्रिकालदर्शी बनाते हैं। कितनी अच्छी बाते हैं। तुम हो सुनते हो और खुशी होती है।बाहर वाले यह सुनें तो बहुत अजब खायें।वाँ हो यह तो बहुत ... तुम भी ऐसा स्वदर्शनचक्रधारी बनो तो फिर चक्रवर्ति राजा, विश्व का मालिक बन जावेंगे। यहाँ से बाहर गये,खलास।माया बहुत बलवान है यहाँ की यहाँ रही ही जाती।जैसे गर्भ से बच्चा इन्जाम(प्रतिज्ञा) कर निकलते है फिर भी वहाँ की वहाँ रह जाती है। तुम प्रदर्शनी आद में समझाते हो बहुत अच्छा2 करते है, नालेज बहुत अच्छी है,मैं ऐसा पुरुषार्थ करूंगा, यह करूंगा। बस। बाहर निकला वहाँ की वहाँ रही। परन्तु फिर भी कुछ न कुछ असर रहता है।ऐसे नहीं कि वह फिर कब आवेंगे नहीं।फिर भी आवेंगे।झाड़ की वृधी होती जावेगी।झाड़ वृधी को पायेगा तो फिर सब को खैंचेगे।अभी तो यह है ही वैश्यालय। रौरव नर्क । गरुड़ पुरान में भी ऐसी2 बातें लिखी हुई है। रोचक बातें मनुष्यों को सुनाते है कि कुछ डर रहे।उनसे ही निकला है मनुष्य बिच्छु-टिन्डन बनते है।बाप कहते है मैं तुमको अब विषय वैतरनी नदी से निकाल तुमको क्षीर सागर मे भेज देता हूँ।यह भी अच्छी रीत समझना है। हम असल शान्ति धाम के निवासी थे।फिर सुखधाम में पार्ट बजाने आये।अभी हम फिर जाते है शान्तिधाम सुख धाम। यह धाम तो याद करेंगे ना।गाते भी है तुम मात-पिता...तुमरी कृपा ते सुख घनेरे।वह सुख घनेरे तो होता ही है सतयुग में। यह है संगम युग।यहाँ पिछाड़ी में मनुष्य त्राह2 करेंगे।क्योंकि अति दुख होना है। फिर सतयुग आद में अति सुख होगा।अति सुख और अति दुख का खेल बना हुआ है।विष्णु अवतरण भी दिखाते है। लक्ष्मी नरायण का जोड़ा जैसे उपर से आती है।अब उपर से कोई आते थोड़े ही है।श्रीकृष्ण का अवतरण भी उल्टा बताया है। उपर से आती तो हरेक आत्मा है। परन्तु ईश्वर का अवतरण बहुत विचित्र है। वह ही आकर भारत को स्वर्ग बनाते हैं।परन्तु इनका त्योहार मनाते नहीं।अगर मालूम हो तो परम पिता परमात्मा ही मुक्ति और जीवन मुक्ति का वर्सा देता है तो सारी विश्व में गाड फादर का त्योहार मनाते। बेहद के बाप का मनावे तब जब समझे कि शिव बाबा ही लिबरेटर, गाइड है।उनका जन्म ही भारत में होता है।शिव जयन्ती भी भारत में ही मनाते है।परन्तु पूरी पहचान नहीं है तो होली डे भी नहीं करते। जब बाप सर्व की सदगति करने वाला है उनकी जन्म भूमि; जहाँ अलौकिक कर्तव्य करते है उनका

जन्म दिन और तीर्थ यात्रा तो मनानी चाहिए। तुम्हारा यादगार मंदिर भी यहाँ ही है। परन्तु किसको पता नहीं है कि शिव बाबा ही आकर लिबरेटर गाइड बना है। कहते भी है सब दुःख से छुड़ाये सुखधाम में ले जाते हैं। परन्तु समझते नहीं हैं। परमात्मा को सर्वव्यापी कहने से, गीता को खण्डन करने से कितना महत्व उड़ गया है। परन्तु यह भी ड्रामा में बना हुआ है। भारत बहुत ऊंच ते ऊंच खण्ड है। भारत की महिमा अपरमअपार गाई जाती है। वहाँ ही शिव बाबा का जन्म होता है। इसको कोई जानते नहीं। स्टैम्प नहीं बनाते। औरों की तो बहुत बनाते रहते है। अब कैसे समझाया जाये जो इनके महत्व का दुनिया में सब को पता पड़े। विलायत में भी जहाँ सन्यासि आदि जाये भारत का प्राचीन योग सिखलाते है, जब तुम यह राजयोग बतावेंगे तो तुम्हारा बहुत नाम होगा। बोलो राजयोग किसने सिखाया था यह किसको भी पता नहीं है। कृष्ण ने भी तो हठयोग सिखाया नहीं। यह हठयोग है ही सन्यासियों का। जो अच्छे पढ़े-लिखे है, जो अपने को फिलासफर आदि कहलाते हैं, बहुत शास्त्र पढ़े हुये हैं वह इन बातों को समझ और सुधर जाये, कहे हमने भी शास्त्र पढ़े परन्तु अभी बाप जो सुनाते है वह राइट है। बाकि सब रांग है तो यह समझे कि बड़े ते बड़ा तीर्थ स्थान तो यह है। जहाँ बाप आते है। तुम बच्चे जानते हो इसको कहा जाता है धर्म भूमि। यहाँ जितने धर्मात्मा रहते है उतना और कहाँ नहीं। तुम कितना धर्म करते हो। बाप को जान कर तन, मन, धन सब इस सेवा में लगाये देते हो। बाप ही सबका लिबरेटर है। सब को दुःख से छुड़ाते है। और धर्म स्थापक कोई दुःख से नहीं छुड़ाते। वह तो आते है उनके पिछाड़ी नम्बरवार सब पार्ट बजाने आते है। पार्ट बजाते 2 तमोप्रधान बनते हैं। फिर बाप आकर सतोप्रधान बनाते है। तो यह भारत कितना बड़ा तीर्थ है। यह किसको पता नहीं है कि यह भारत सब से नम्बरवन ऊंच भूमि है। बाप कहते है मेरी यह जन्म भूमि है। मैं आये सब की सद्गति करता हूँ। भारत को हेविन बनाये देता हूँ। तुम जानते हो बाप स्वर्ग का मालिक बनाने आये है। ऐसे बाप को बहुत प्यार से याद करो। तुमको देख और भी ऐसे कर्म करेंगे। इनको ही कहा जाता है दिव्य अलौकिक कर्म। ऐसे मत समझो कि कोई नहीं जानेंगे। ऐसे निकलेंगे कि तुम्हारे यह चित्र भी ले जावेंगे। अच्छे 2 चित्र बने तो ले जावेंगे। स्टीमर पर कर ले जावेंगे। स्टीमर जहाँ 2 खड़ा रहता है वहाँ यह चित्र लगाये देंगे। तुम्हारी बहुत सर्विस होनी है। बड़े चित्र बनेंगे। बहुत उदारचित हुण्डी सकारने वाले सदिल शाह की निकलेंगे जो ऐसे 2 काम करने लग पड़ेंगे। ताकि सब को मालूम पड़े कि यह कौन है। जो इस पुरानी दुनिया को बदल नई की स्थापना करते है। तुम्हारी भी पहले तुच्छ बुधि थी। अभी तुम कितने स्वच्छ बुधि बनते हो। जानते हो हम इस ज्ञान और योग बल से विश्व को हेविन बनाते है। बाकि सब मुक्ति धाम में चले जावेंगे। तुमको भी अथॉरिटी बनना है। बेहद के बाप के बच्चे हो ना। सर्व शक्ति मिलती है याद से। बाप को वर्ल्ड आलमाइटी अथॉरिटी कहा जाता है। सभी वेदों, शास्त्रों का सार बताते है। इसलिए इनको शास्त्रों की अथॉरिटी कहा जाता है। तो बच्चों को कितना उमंग रहना चाहिए सर्विस का। मुख से सिवाय ज्ञान रत्नों के और कुछ न निकले। तो हरेक बसंत हो। तुम देखते हो सारी दुनिया कितनी सब्ज बन जाती है। सब कुछ नया। वहाँ दुःख का नाम नहीं। 5 तत्व भी तुम्हारे सर्विस में हाजिर रहती है। अभी वह डिससर्विस करती है। क्योंकि लायक नहीं हो। नालायक हो। रावण ने नालायक बनाया है। बाप लायक बनाते है। बाप तुम्हारा गाइड बना है। जहाँ ले जाते है उसका भी तुमको साक्षात्कार हुआ है। मनुष्य तो न घर को जानते है न बाप को जानते है। जो कुछ नहीं जानते उनको तो कहा जावेगा यह तो जैसे जट हैं। जट उनको कहते है जो ऊंट को चलाते है। आत्मा भी जट शरीर रथ को चलाने नहीं जानती। रावण कितना जट बनाये देते है। आत्माभिमानी से देहाभिमानी बनाये देते है। बाडीकान्सस से तुम क्या बन जाते हो। सोल कान्सस में तुम क्या बनते हो। कितना फर्क है। अच्छा मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का याद-प्यार गुड मार्निंग। अच्छा जी अब विदाई। ओम।